अम्बेडकरवादी आत्मकथाओं के विविध आयाम एवं अनुभूति

नीरू देवी[1]
शोधार्थी
महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विष्वविद्यालय
बरेली–263006 उत्तर प्रदेष

प्रो० दुर्गेष राय[2]
शोध निर्देषक
के०जी०के० कॉलिज मुरादाबाद उत्तरप्रदेष

शोध साराँष–
अम्बेडकरवादी आत्मकथाये व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन एवं अनुभव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती है। जो यह दर्षाती है कि व्यक्ति को जीवन जीने में कितनी कठिन परिस्थितियों से गुजरना पडता है। ये अम्बेडकरवादी आत्मकथाये न केवल व्यक्तिगत अनुभवें को व्यक्त करती है बल्कि अम्बेडकरवादी समुदाय के सामने आने वाली सामाजिक सांस्कृतिक और राजनैति चुनौतियों को भी उजागर करती है। अम्बेडकरवादी दलित आत्मकथायें भारतीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। उन आत्मकाथाओं के माध्यम से दलित लेखक अपनी मूक आवाज को बुलंद करता है। और समाज में व्याप्त जातिगत भेद भाव एवं वर्ग उत्पीडन के खिलाफ आवाज उठाते है और हिन्दी अम्बेडकर आत्मकाथाओं में विविध आयाम देखने को मिले है। इन आत्मकाथाओं के प्रमुख आयाम इस प्रकार है। जैसे कि व्यक्तिगत अनुभव मानसिक शारिरिक, एवं सामाजिक कुंठा जीवन की तालाष स्त्री शोषण, वर्णभेद अम्बेडकरवादी आत्मकाथाओं में वर्णित अंधविष्वास इत्यादि है। ये आत्मकाथाओ व्यक्तिगत कहानियाँ नहीं बल्कि समाज के हाषियें पर खडे लोगो पीडा और संघर्ष को दर्षाती है। हिन्दी दलित आत्मकाथाये भारतीय साहित्य का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण हिस्सा है। ये आत्मकथाये न केवल दलित समुदाय की आवाज को बुलेद करती है बल्कि समाज के जातिगत भेद भव और असमानता के गम्भीर मुद्दो पर गम्भीरता से विचार के लिए प्रेरित करती है। इन आत्मकाथाओ के अध्ययन से दलित समुदाय के इतिहास संस्कृति सामाजिक संघर्षो को बेहतर ढंग से समझ सकते है।

प्रस्तावनाः–
साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है। अर्थात् समाज में जो घटनाए घटित होती है। सहित्यकार उन्हे अपनी रचनाओं में प्रतिबिम्बित करता है। अर्थात् सहित समाज का दर्पण है। इससे यह ज्ञात होता है कि साहित्य का अपना एक विषेष रूप एवं अद्वितीय रूप होता है। जो समाज की अच्छाई एवं बुराई दोनो पक्षो को ही प्रतिबिम्बित करता है। सभी साहित्यकारो पर स्थिति परिस्थति का प्रभाव स्वभाविक है। अर्थात उनको समसायिक एवं मनोसामाजिक स्थिति साहित्यकारो की दृष्टि को प्रखर रूप होता है। जिस परिस्थति में वे पले बडे होते है यह प्रभाव अम्बेडकर वादी आत्मकाथायों में भी स्पष्ट रूप मे दिखाई पडता है। हालाकि अम्बेडकरवादी आत्मकाथाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई पडता है। एवं अम्बेडकरवादी साहित्य कोई बहुत बड़ा साहित्य नही है। ना ही बहुत बड़ा विस्तृत लिख हुआ इतिहास उपलब्ध है। जोकि अम्बेडकरवादी आत्मकाथाओं में विविध आयाम देखने को मिलते है और अम्बेडकरवादी आत्मकाथाओं उन षिलालेखों की तरह है जिन पर दलित आत्मकाथाये व्यक्ति के व्यक्तिगत अनुभवो का कच्चा चिट्ठा होती है। जो बचपन से लेकर युवावस्था एवं प्रौठावस्था तक हो सकते है। लेखक अपने जीवन के विभिन्न पहलुओ जैसे षिक्षा स्कूली जीवन, विवाह, रोजगार, आदि का वर्णन करते है ये आत्मकाथाये व्यक्ति के लिए जीवन एवं जमीन की तालाष करती रहती है। लेखक अपने अनुभवों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की आवष्यकता पर बल है अम्बेडकरवादी आत्मकाथाओं में लेखक अक्सर जाति व्यवस्था द्वारा थोपे गये परंपरिक मूल्यो ंको चुनौती देते है। और वैकिल्पक मूल्यो ंको प्रस्तुत करते है ये वैकल्पिक मूल्य आमतौर पर समानता न्याय

मानवता और स्वतन्त्रता पर आधारित होते है। इन आत्मकाथाये माध्यम से दलित लेखक अंधविष्वास को उजागर करते है और लोगो को जागरूक करते है और यह आत्मकाथाये हमे यह समझाने मे मदद करती कि अंधविष्वास किस तरह से समाज को नुकसान पहुँचाते है। हमे इनसे कैसे मुक्ति पानी है। इन सभी विविध आयाम पर इस शोध पर में विस्तृत अध्ययन किया गया है

व्यक्तिगत एवं आत्मनुभवः–

आत्मकाथाओं में वर्णित व्यक्तिगत अनुभव स्व आत्मानुभव भीतरी सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृति वास्तविकताओ को उजागर करते है। ये आत्मानुभव मुख्य रूप से आर्थिक समस्या, मानसिक समस्या, जातिगत, भेदभाव और उत्पीडन शैक्षिक संघर्ष नारी दलित अनुभव सामाजिक बहिष्कार इत्यादि बिन्दुओ पर केन्द्रित होता है। ''षिंकजे का दर्द'' आत्मकाथा में सुषीला टाकभौरे को अत्यधिक कठिनाईयो का सामना करना पडा। वे कहती थी कि एक दिन उन्हें अस्पताल में गंदे कपड़े उठाने पडे जिससे उनके आत्मसम्मान को अत्यधिक ठेस पहुची और उन्ही के साथ रहने वाले एक युवक अध्यापक के देखने पर उन्हे और भी ग्लानि महसूस होती है। वे कहती है– कि हमारी जाति का अभिषाप पीछे नहीं छोडता। वह हमेषा अपने नुकीले विषैले दंष चुभाता है जिससे टिस–टिस दर्द तो होता है और आंसु भी झरते है। मन में कसक होती है। वे कहती है कि हमारे स्कूल की कई अध्यापिकाए एक साथ चाय पीने छोटी सी दुकान पर जाती है वही एक स्कूल की चपरासी महिला आ जाती है। वह भी चाय पीने उन सबके पास बैठ जाती है जिस पर एक सर्वण अध्यापिका भड़क उठती है। इससे एक सर्वण महिला एक निम्न जाति के भेद भाव का गहरा दंष समाज से पीछा नही छूटता। वे कहती है कि मै आपनी जाति के अपमान के भूल नही पाती। जाने अनजाने ने जो घटनाए या प्रसंगवस होती है वह मेरे जातिवोध को कुरदेती है सम्मान होने पर भी सम्मान का बोध नही होता।

वे आगे लिखती है–समाज में स्त्रियो के बारे में पुरूषो की मानसिकता अधिकतर कामुक रही गरीब अछूत की बेटी की इज्जत कभी भी नोची जा सकती है।

ऐसा नही कि उच्च वर्ग की महिलाओं का शोषण नही होता है होता है परन्तु उन्हे दबा लिया जाता है समाज के डर से जबकि निम्न जाति की महिला का शोषण खबर का मुख्य पेज बनता है।

नयी राह व नयी जमीन की तलाष–

दलित वर्ग अब उस असहन पीडा से बाहर आना चाहता है और वह खामोषी तोडता नजर आ रहा है। अब वह अपने समाज में परिवर्तन लाना चाहता है जिसका उदेद्ष्य मुख्य रूप से दलित समाज व दलित समुदाय के सदस्यों द्वारा आपकी पहचान सम्मान और सामाजिक स्थान की खोज के लिए किये गये संघर्षों को उजागर करता है। अम्बेडकरवादी आत्मकथाओं में नयी ''जमीन की तालाष'' जो व्यापक रूप में है। जो दलित समुदाय की आकांक्षाओ संघर्षो और उनके भावसे भविष्य की सम्भावनाओ को दर्षाता है यह एक ऐसा साहित्यिक प्रयास है जो समाज के हषिये पर खडे समुदाय को मुख्या धारा में लाने के लिए एक नई दिषा प्रदान करता है।

आधारभूत जीवन मूल्य–

आधार जीवन मूल्य वे मूल्य होते है जो मुख्य धारा के सामाज द्वारा स्थापित मानदण्डो से भिन्न होते है ये मूल्य अम्बेडकरवादी समुदाय के संघर्ष उनके आत्म सम्मान स्वभाविमान और सामाजिक न्याय की दिषा में उनकी यात्रा को दर्षाते है हमारा समाज चतुरवर्ग व्यवस्था पर आधारित है जिस पर हिन्दू धर्म का निर्माण हुआ है सदियों से पषुवत जीवन कठोर जीवनयापक कर दलितो ने अपने आप को जिन्दा रखा हुआ है इन्होंने अपने जीवन में इतनी कठिन परिस्थितियों में जीवन यापन किया है।

शुषीला टाकभौरे अपनी आत्मकथा ''षिकंजे का दर्द'' में वयान किया है हमे किराये का मकान ढूंढते समय और किराये के मकान में रहने के समय अनेक दंष झेलने पडे

कुछ लोग महाराष्ट्र प्रांत के कुछ लोग जाति के वर्ण और जातिगत भेद भाव के स्तर को नही जान पाते पर जैसे ही पता चला वे तुरन्त मना कर देते।

लोग पढे लिखे होने के बावजूद भी इतना बुरा सलूक करते थे कि सहन ही नही हो पाता था और सोचने पर मजबूर हो जाते कि आखिर समाज में हमारी इतनी बुरी दषा हो गयी है।

'डॉ० तुलसीराम' अपनी आत्मकथा ''मुर्दहिया'' में लिखते है कि उनके पास पढ़ने के पैसा नही था और अपने वजीफे से हास्टिल में रहकर गुजारा करना पडता था उनके कुछ 27 रूपये की धनराषि खर्चा चलाने के लिए स्कालर्स के रूप में मिलती थी। एक बार 6 माह की स्कालर्स 162 रूपये मिले थे तभी उनके एक प्रिय मित्र थे जो जाति से ब्राहण थे। उन्होने से कॉलेज जाते समय रास्ते में उनके साथ धोखा कर देता है और तमंचे के बल पर 81 रूपये छीन लेता है जिससे तुलसी राम के मन मे पढाई के प्रति जो ख्वाव थे वे चकनाचूर हो गये क्योंकि उनके पैसे का बहुत आभाव था वे अच्छे कपडे व किताबे नही खरीद पाते थे। जिससे जीवन में अर्थिक समस्या का सामना करना पड़ रहा था।

<u>अम्बेडकरवादी आत्मकाथाओं में अन्धविषवासो के व्यख्यानः–</u>

भारतीय समाज में व्यापक को गहराई से दर्षाता है और समाज में इन अंधविष्वास को उजागर करता है अम्बेडकर अंधविष्वास के प्रति कठोर विरोध में रहा है और अम्बेडकर वाद अंधविष्वास को जड़ को हिलाने का भरसक का प्रयास करता है। परन्तु मनुष्य की भविष्य पर उस अंधविष्वास की गहरी छाप है जो उसकी जड को खत्म ही नही होने देना चाहती। इन आत्मकथाओं में वर्णित अंधविष्वास मानव के जीवन पर गहरा प्रभाव डालता है। जो उनके सामाजिक अर्थिक उत्थान में बाधा डालता है भारतीय संविधान द्वारा भले ही दलितो को समानता का अधिकार प्राप्त है। परन्तु उन्हे षिक्षा प्राप्त करने एवं मंदिरो में प्रवेष करने की अनुमति है। फिर भी समाज कुछ वर्ण व्यवस्था के चलते कुछ समिति लोगों द्वारा उन्हे तिरस्कृत और अपमानित किया जाता रहा है। उन्हे अछूत की दृष्टि से देखा और समझा जा रहा है।

डॉ० तुलसीराम की आत्मकथा में ''भूतही पारिवारिक प्रष्ठ भूमि'' में अंधविष्वास को दर्षाया गया कि इसी बीच दादा जी एक दिन खलियान मे रात को सोय हुए थे कि संतरीन लाठी लेकर आया यानी रात में भूत आया उसने दादा जी को लाठी से पीट पीट कर मार डाला। दादा जी को मैंने कभी देखा नही था। क्योंकि उनकी यह भूतही हत्या मेरे जन्म से अनेक वर्ष पूर्ण हो चुकी थी इस हत्या की गुत्थी मेरे लिए अब भी एक उलझी पहेली बनी हुई है।

मूर्दहिया आत्मकथा में भूतप्रेत का जादूटोना ओर अंधविष्वास से भरा पडा है जैसे किसी के सर पर कौआ बैठ जाता है। तो उसे अपषगुन माना जाता है लेखक की दायी आँख चेचक के कारण खराब हो गयी तो समाज उसे अपषगुन माने लगा। बाकी अम्बेडकरवादी व्यक्तियों की तरह डॉ० तुलसीराम भी रूढिवादी समाज से लडते रहे।

निकर्षः–

ये आत्मकाथाये भारतीय साहित्य का एक अभिन्न महत्वपूण खोज है ये आत्मकाथाये न केवल पीडित एवं सामज से ठुकराये लोगो की व्यथा को चिन्हित करती है बल्कि उनके खिलाफ आवाज उठाती है और समाज को जागरूक करने एव सामाजिक परिवर्तन लाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है पीडित समाज आज अपने सम्मान के लिए लड़ रहा है इस व्यवस्था के प्रति जो घृणित रवैया है उसमें बदलाव चाहता है अतः अम्बेडकरवादी आत्मकथाओ जो लेखक रहे उन सभी लेखको के जीवन में अत्याचार अपमान अन्याय का अनुभव दिखाई पडता है इस शोध पत्र में व्याख्ययित विविध आयाम जैसे कि व्यक्तिगत आत्मनुभव नई

राह नई जमीन की तालाष, आधार भूत, जीवन मूल्य, अम्बेडकरवादी आत्मकथाओं में अंधविष्वास, इत्यादि ले लेकर जीवन की कठिन कडी को मुख्य धार में लाने में मदद मिलेगी और नयी दिषा का पुन नया नजरिया बदलेगा।

सन्दर्भ सूची:

1. चौहान, सूरजपाल, तिरस्कृत, अनुभव प्रकाषन. दिल्ली. (2002), पृष्ठ संख्या 9।
2. चौहान, सूराजपाल, तिरस्कृत, अनुभव प्रकाषन. नई दिल्ली. (2002) पृष्ठ संख्या 10–11।
3. बैचेन, षिवराजसिंह, मेरा बचपन मेरे कंधो पर, वाणी प्रकाषन दरियागंज. (2009) नई दिल्ली।
4. टाकभौरे, सुषीला, षिंकजे का दर्द, वाणी प्रकाषन, दिल्ली (2009) पृष्ठ 237।
5. टाकभौरे, सुषीला, षिंकजे का दर्द, वाणी प्रकाषन, दिल्ली (2009) पृष्ठ सं० 725।
6. टाकभौरे, सुषीला, षिंकजे का दर्द, वाणी प्रकाषन, दिल्ली 2009 पृष्ठ संख्या 167।
7. राम तुलसी, मुदहिया, राजकमल प्रकाषन, दिल्ली पृष्ठ संख्या 9–10।
8. राम तुलसी, मुदहिया, राजकमल प्रकाषन, दिल्ली पृष्ठ संख्या 177–178।
9. टाकभौरे, सुषीला, षिंकजे का दर्द, वाणी प्रकाषन, दिल्ली 2009 पृष्ठ संख्या 166।